वाक्य-विचार

शब्दक सार्थक मेलकेँ वाक्य कहल गेल अछि ।

यथा- राम पत्र लिखैत अछि । ई एक वाक्य भेल । वाक्यक अर्थ बोध लेल आवश्यक होइछ आकांक्षा योग्यता आ आसत्ति (तीनूक वर्णन आगू कयल अछि) ।

बनावट वा **रचनाक** विचारसँ वाक्यक तीन भेद अछि – **सरल वाक्य, मिश्र वाक्य** आ **संयुक्त वाक्य** ।

1. **सरल वाक्य**-जाहि वाक्यमे एक कर्ता ओ एक क्रिया हो, से सरल वाक्य थिक ।

   यथा-राम घर जाइत अछि ।

   एहि वाक्यक दु खण्ड होइत अछि –उद्देश्य आ विधेय ।

   क. उद्देश्य – वाक्यमे जकरा विषयमे कहल गेल अछि ओ भेल उद्देश्य ।
   यथा-सीता पत्र लिखैत अछि । एहि वाक्यमे 'सीता' उद्देश्य भेल । कारण इएह काज करैत अछि ।

   ख. विधेय-उद्देश्यक विषयमे जे किछु कहल जाइत अछि से विधेय भेल ।
   यथा-सीता पत्र लिखैत अछि । एहि वाक्यमे 'पत्र लिखैत अछि' विधेय थिक । कारण सीताक विषयमे इएह कहल गेल अछि ।

2. **मिश्र वाक्य**-जाहि वाक्यमे एक प्रधान उपवाक्य आ ओहि पर आश्रित अन्य उपवाक्य रहय, से भेल मिश्र वाक्य ।

   यथा-सीता एक लड़की अछि जे तेज अछि । एहि वाक्यक दु गोट खण्ड अछि ।

   पहिल-सीता एक लड़की अछि ।

   दोसर-जे तेज अछि ।

   आब एतय उपवाक्यक चर्चा करब प्रासंगिक अछि ।

उपवाक्य वाक्यक एक खण्ड होइत अछि जाहिमे एक कर्ता आ एक क्रियाक रहब आवश्यक अछि ।

यथा-राम एक छात्र अछि जे गरीब अछि ।

प्र० उप०　　　आ० उप०

एहि वाक्यमे दू उपवाक्य अछि । पहिल प्रधान उपवाक्य कहबैछ । कारण प्रधान उपवाक्यक अर्थ पहनहि स्वत: स्पष्ट रहैत अछि ।

यथा-उपर्युक्त वाक्यक रेखांकित प्रथम उपवाक्य ।

आश्रित उपवाक्य-जाहि उपवाक्यक अर्थ प्रधान उपवाक्यपर निर्भर करैत अछि से भेल आश्रित उपवाक्य ।

यथा-उपर्युक्त वाक्यमे 'जे गरीब अछि' आश्रित उपवाक्य अछि ।

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार होइछ -- संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य तथा क्रियाविशेषण उपवाक्य ।

संज्ञा उपवाक्य- जे उपवाक्य संज्ञाक काज करैत अछि से भेल संज्ञा उपवाक्य ।

यथा-राम कहलनि जे ओ घर जयताह ।

प्र० उप० आ० उप०

'जे ओ घर जयताह' संज्ञा उपवाक्य अछि ।

विशेषण उपवाक्य-जे आश्रित उपवाक्य विशेषणक काज करैत अछि से विशेषण उपवाक्य कहबैछ ।

यथा-राम एक लड़का अछि जे गरीब अछि ।

प्र० उप० आ० उप०

एतय 'जे गरीब अछि' रामक विशेषता बता रहल अछि । तेँ ई विशेषण उपवाक्य भेल ।

क्रिया विशेषण उपवाक्य-जे आश्रित उपवाक्य क्रियाविशेषणक काज करैत अछि, से क्रियाविशेषण उपवाक्य कहबैछ ।

यथा-जखन सूर्योदय भेल, अन्धकार विलीन भऽ गेल । एहि वाक्यमे सूर्योदय भेला पर अन्धकार विलीन भेल । विलीन क्रियाक विशेषता प्रथम उपवाक्य कऽ रहल अछि । तेँ प्रथम उपवाक्य क्रिया विशेषण उपवाक्य भेल ।

3. **संयुक्त वाक्य**-जाहि वाक्यमे दू वा दूसँ अधिक सरल वाक्य वा मिश्रवाक्य आओर, वा, अथवा, मुदा, आ आदिसँ जोड़ल रहैत अछि, ओ संयुक्त वाक्य कहबैछ ।

यथा-राम आयल आ हुनक पिताजी चलि गेलाह ।

एहिमे दुनू वाक्य स्वतन्त्र अछि। तेँ ई संयुक्त वाक्य भेल।

अर्थक विचारसँ वाक्यक आठ भेद अछि-

(i) विधिवाचक (ii) निषेधवाचक (iii) इच्छाबोधक (iv)आज्ञाबोधक (v) प्रश्नवाचक (vi) विस्मयादिबोधक (vii)संदेहवाचक (viii) संकेतवाचक।

1. **विधिवाचक** -जाहि वाक्यसँ कोनो बातक होयबाक ज्ञान होइत अछि, ओ विधिवाचक वाक्य भेल।

   यथा-शिक्षक नीक पोथी पढ़ैत छथि।

2. **निषेधवाचक** -जाहि वाक्यसँ कोनो कार्य-व्यापारक नहि होयबाक सम्भावना रहैत अछि से निषेधवाचक वाक्य भेल।

   यथा- राम मनसँ नहि पढ़ैत छथि।

3. **आज्ञाबोधक** -जाहि वाक्यसँ आज्ञा, आदेश, आग्रह, सलाह आदिक भाव व्यक्त हो, से भेल आज्ञाबोधक वाक्य।

   यथा- पत्र लिखू। नीक काज करू।

4. **प्रश्नवाचक वाक्य**-जाहि वाक्यसँ प्रश्नक बोध हो से प्रश्नवाचक वाक्य भेल।

   यथा-सीता कतय गेलीह ?

5. **इच्छाबोधक**-जाहि वाक्यसँ कोनो इच्छा, प्रार्थना, शुभकामना प्रकट हो।

   यथा-भगवान नीक करथि।

6. **विस्मयादिबोधक**-जाहि वाक्यसँ हर्ष, घृणा, विस्मय, शोक आदिक बोध होइत अछि, से विस्मयादिबोधक वाक्य कहबैछ।

   यथा- आह ! हुनक पिताजी मरि गेलनि।

7. **संदेहवाचक** -जाहि वाक्यसँ कार्य होयबामे संदेह रहैत अछि से भेल संदेहवाचक वाक्य।

   यथा- राम पत्र लिखने होयताह।

8. **संकेतवाचक**-जाहि वाक्यसँ कोनो शर्त अथवा संकेतक बोध हो से भेल संकेतवाचक वाक्य।

   यथा- जँ राम पढ़ितथि तँ कथमपि असफल नहि होइतथि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वाक्यकें सोदाहरण परिभाषा लिखू ।
2. रचनाक विचारसँ वाक्यक भेदक नाम लिखू ।
3. उपवाक्य ककरा कहल जाइत अछि ?
4. अर्थक विचारसँ वाक्यक कोन-कोन भेद अछि ?
5. उपवाक्यक भेदक अन्तर सोदाहरण बताउ ।
6. निम्नलिखितमे सरल वाक्य, मिश्र वाक्य आ संयुक्त वाक्यकेँ फराक करू ।
   (क) देश सेवासँ मेवा भेटैत अछि, जँ मनसँ कयल जाय ।
   (ख) सीता रामकेँ जनैत अछि ।
   (ग) ओ सभ कतेक दिनसँ नहि अयलाह ?
   (घ) जे पढ़त, से पास करत ।
   (ङ) जखन वर्षा होइत अछि, मोर नचैत अछि ।
7. निम्नलिखित वाक्य अर्थक विचारसँ कोन वाक्य थिक ?
   (क) पुस्तक पढ़ू ।
   (ख) भगवान् रक्षा करथि ।
   (ग) हल्ला नहि करू ।
   (घ) अहाँ कतय छी ?
   (ङ) सीता घर गेल हेतीह ।
8. निम्नलिखित वाक्यमे आश्रित वाक्यकेँ रेखांकित कऽ नामोल्लेख करू ।
   (क) जँ ओ पटना औताह, तँ हम अवश्य मदति करब ।
   (ख) अपने कहने छलहुँ जे ओ अवश्य औताह ।
   (ग) सीता जे हमरा संग पढ़ैत अछि, तेज अछि ।
   (घ) जे गरीबक मदति करैत छथि ओ ईश्वर समान छथि ।
   (ङ) अहाँ आगू बढ़ू जँ हड़बड़ायल छी ।

वाक्यान्तरण

वाक्यान्तरण कोनो भाषाक महत्त्वपूर्ण अंग थिक । बिना अर्थमे परिवर्तन कयने वाक्यक स्वरूपमे परिवर्तन वाक्यान्तरण कहबैछ ।

जेना-एक छात्र दू दिन अलग-अलग पोशाकमे विद्यालय अबैत अछि । छात्रक रूप बदलैत अछि, मुदा रहैत अछि ओएह छात्र । ओकर बाह्य रूपमे परिवर्तन अबैत अछि ।

निम्नलिखित उदाहरण द्वारा वाक्यान्तरकेँ देखाओल जाइत अछि –

सरल वाक्य – सीता पत्र लिखैत अछि ।

मिश्र वाक्य – सीता कहैत अछि जे हम लिखैत छी ।

सरल वाक्य – ज्ञानी प्रसन्न रहैत छथि ।

मिश्र वाक्य – जे ज्ञानी छथि से प्रसन्न रहैत छथि ।

मिश्र वाक्य – जे मनसँ पढ़ैत छथि से पास करैत छथि ।

सरल वाक्य – मनसँ पढ़निहार पास करैत छथि ।

मिश्र वाक्यसँ सरल वाक्य

मिश्र – जखन धन होइत अछि तँ घमंड भऽ जाइत छैक ।

सरल – धन भेला पर घमंड भऽ जाइत छैक ।

मिश्र – जे परिश्रम करैत छथि, से सफल होइत छथि ।

सरल – परिश्रमी सफल होइत छथि ।

सरलसँ संयुक्त वाक्य

सरल – सूर्यास्त भेला पर अन्हार पसरि गेल ।

संयुक्त – सूर्यास्त भेल आ अन्हार पसरि गेल ।

सरल – अहाँक बाहर गेलाक बादे ओ चल गेलाह ।

संयुक्त – अहाँ बाहर गेलहुँ आ ओ चल गेलाह ।

संयुक्त वाक्यसँ सरल वाक्य

संयुक्त – शिक्षक अयलाह आ छात्र शान्त भऽ गेल ।

सरल – शिक्षकक अबिते छात्र शान्त भऽ गेल ।

संयक्त – गरीबी आयल आ हुनक सब मित्र विदा भऽ गेल ।

सरल – गरीबी अबिते हुनक सब मित्र विदा भऽ गेल ।

मिश्र वाक्यसँ संयुक्त वाक्य

मिश्र वाक्य-जखन श्रीमती इन्दिरा गाँधीक हत्या भेल, राजीव गाँधी प्रधानमंत्री भेलाह ।

संयुक्त वाक्य-श्रीमती इन्दिरा गाँधीक हत्या भेलाक बाद राजीव गाँधी प्रधानमंत्री भेलाह ।

सरल वाक्य-हमरा घरमे विद्यापतिक लिखल श्रीमद्‌भागवत अछि ।

मिश्र वाक्य-हमरा घरमे श्रीमद्‌भागवत अछि जे विद्यापति द्वारा लिखल गेल अछि ।

संयुक्त वाक्य-हमरा घरमे श्रीमद्‌भागवत अछि आ एकर लेखक विद्यापति छथि ।

अर्थक विचारसँ वाक्यान्तरण

विधिवाचक-सीता रामसँ तेज अछि ।

निषेधवाचक-राम सीतासँ तेज नहि अछि ।

निषेधवाचक-अपन सफलता केओ नहि जनैत अछि ।

प्रश्नवाचक-अपन सफलताकेँ के जनैत अछि ?

विधिवाचक-प्रत्येक व्यक्ति मृत्युसँ डेराइत अछि ।

प्रश्नवाचक-कोन जीव मृत्युसँ नहि डेराइत अछि ?

विस्मयादि बोधक-वाह ! अहाँ कतेक महान छी ।

विधिवाचक-अहाँ बड़ महान छी ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वाक्यान्तरणसँ अहाँ की बुझैत छी ?
2. वाक्यान्तरणमे रूप/अर्थ बदलि जाइत अछि ।
3. निम्नलिखित वाक्यकेँ कोष्टक निर्देशानुसार बदलू –

   (i) सीता रामक पत्नी छलीह । (मिश्रवाक्य)

   (ii) शिक्षकक अबिते छात्र शान्त भऽ गेलाह । (संयुक्त वाक्य)

   (iii) पिताजी अयलाह आ हमरा लोकनि चल गेलहुँ । (सरल)

   (iv) जखन हम ओतय गेलहुँ, ओ सभ सुति रहल छलाह । (सरल)

   (v) कोन छात्र एहन अछि जे शिक्षकसँ नहि डेराइत अछि ? (स्वीकृति वाचक)

वाक्य-रचना

वाक्य विचारमे वाक्यक विषयमे चर्चा कयल गेल अछि । वाक्यक द्वारा हमरा लोकनि मोनक भाव प्रकट करैत छी । तेँ जे वाक्य भाव वा अर्थकेँ स्पष्ट करबामे जतेक सफल होइत अछि, ओ ओतेक नीक मानल जाइत अछि । सुन्दर ओ सरल वाक्य द्वारा लेखक वा वक्ता अपन भाव वा कल्पनाकेँ व्यक्त करबामे सफल होइत छथि ।अतएव एहन वाक्यक लेल निम्नलिखित गुणक रहब आवश्यक –

1. आकांक्षा 2. योग्यता 3. सन्निधान 4. पदक्रम एवं 5. अन्विति ।

1. **आकांक्षा**-एक पदकेँ पढ़ला वा सुनलासँ वाक्यक अर्थकेँ जानबाक लेल शेष पदक अपेक्षा वा जिज्ञासा आकांक्षा कहबैछ ।

   यथा –'राम आइ' कहलासँ श्रोताक जिज्ञासा बढ़ि जाइत अछि । ई जिज्ञासा ताधरि बनल रहैत अछि, जाधरि आगूक पद 'घर नहि जयताह' कहल जायत । तेँ जे वाक्य जतेक सफलतापूर्वक एहि जिज्ञासाक पूर्ति करैत अछि, ओ वाक्य ओतबे सफल मानल जाइत अछि ।

2. **योग्यता**- वाक्यमे अभीष्ट अर्थक बोध करयबाक क्षमता योग्यता कहबैछ ।

   यथा-छात्र फूलसँ देवाल तोड़ैत अछि । एहि वाक्यक रचना व्याकरणक दृष्टिसँ उचित अछि, मुदा एहिमे भाव संप्रेषणक योग्यता नहि अछि, तेँ ई अयोग्य अथवा असंगत वाक्य कहाओत ।

3. **सन्निधान**-सम्पूर्ण वाक्यमे प्रयुक्त समस्त पद एक संग उच्चरित हो । अर्थात् प्रत्येक पद एक दोसरक समीप आ लगातार सभक उच्चारण हो ।

   यथा-राम पत्र लिखैत अछि । एहिमे प्रयुक्त चारू पद समीप अछि आ एक्के दममे बाजल जाइत अछि ।

4. **पदक्रम**- वाक्यमे पदक संयोजन पदक्रम कहबैछ । अर्थात् कोन पद कतय प्रयोग कयल जाय तकर व्याकरणिक व्यवस्था रहैत अछि ।

   यथा-अँग्रेजीमे कर्ताक बाद क्रिया आ तखन कर्म अबैत अछि, मुदा मैथिली मे कर्ताक बाद कर्म आ अन्तमे क्रिया अबैत अछि । तेँ कोनो

भाषामे पदक्रम ठीक नहि रहलासँ अर्थबोधमे बाधा उत्पन्न होइत अछि ।
यथा – सीता घर जाइत अछि ।

5. **अन्विति**- वाक्य-रचना व्याकरणक नियमानुसार होयबाक चाही । अर्थात् कर्ता, क्रिया, कर्म, विशेष्य-विशेषण, प्रधान उपवाक्य आ आश्रित उपवाक्य आदिक उचित मेल होयबाक चाही ।

जहिना शब्दरचनाक किछु नियम अछि, तहिना वाक्यरचनाक सेहो किछु नियम होइत अछि । वाक्य रचनामे मुख्य रूपसँ दू बातक ध्यान राखब आवश्यक – पदक्रम आ अन्वय ।

पदक्रम

शब्दक प्रयोग जखन वाक्यमे होइत अछि तँ ओ पद कहबैछ । वाक्यमे कर्ता, क्रिया, कर्म, क्रिया-विशेषण, विशेष्य-विशेषण आदि अनेक पदक प्रयोग होइत अछि । प्रत्येक पदक प्रयोग वाक्यमे नियमानुसार होइत अछि । कोन पदक बाद कोन पदक प्रयोग कयल जाय, इएह पदक्रम कहबैछ ।

पदक्रमक किछु महत्त्वपूर्ण नियम निम्नलिखित अछि –

1. वाक्यमे पहिने कर्ता आ तखन क्रियाक प्रयोग होइत अछि ।
   यथा-राम जाइत अछि ।
2. कर्मक प्रयोग कर्ताक बाद आ क्रियासँ पूर्वहि होइत अछि ।
   यथा-सीता **घर** जाइत अछि । एतय 'घर' कर्म अछि जकर प्रयोग क्रियासँ पूर्वहि भेल अछि ।
3. द्विकर्मक क्रियामे गौण कर्म पहिने आ मुख्य कर्म बादमे रहैत अछि ।
   यथा-पिताजी बालककेँ मैथिली पढ़ौलनि । एहिमे 'मैथिली' मुख्य थिक जकर प्रयोग बादमे भेल अछि ।
4. अन्य कारकक अपेक्षा कर्मकारक क्रियाक समीप रहैत अछि ।
   यथा-छात्रा लोकनि सरस्वती पूजाक हेतु प्रसादक लेल घर-घरसँ **चन्दा** लेलनि ।

5. सम्बोधन कारकक प्रयोग वाक्यमे सभसँ पहिने होइत अछि ।

यथा-**हे** बालक ! प्रात:काल उठू ।

6. समुच्चय बोधक पदक प्रयोग दू पदक बीच होयबाक चाही, जकरा ओ जोड़ैत अछि ।

यथा-राम **आओर** श्याम जाइत छथि ।

7. विशेषणक प्रयोग विशेष्यसँ पूर्व होयबाक चाही ।

यथा-**सुन्दर** फूल नीक लगैत अछि ।

8. प्रविशेषणक प्रयोग विशेषणसँ पूर्व होइत अछि ।

यथा-पण्डितजीकेँ आम **बड़** नीक लगैत छनि ।

9. सार्वनामिक विशेषणक प्रयोग संज्ञासँ पूर्वहि होइत अछि ।

यथा-**ओ** छात्र मनसँ पढ़ैत अछि ।

10. क्रियाविशेषणक प्रयोग क्रियासँ पहिने होइत अछि ।

यथा-हम **यथाशक्ति** अहाँक मदति करब ।

11. पूर्वकालिक क्रियाक प्रयोग कर्म, करण ओ क्रियाक पूर्व होइत अछि ।

यथा-राम **भोजन कऽ** विद्यालय गेल ।

अन्वय अथवा संगति

अन्वयक अर्थ होइत अछि-मेल । अर्थात् कोन पदक संग कोन पदक मेल उचित अछि, तकर विधान बनल अछि, जकर उल्लघंन कयलासँ अर्थदोष, वाक्यदोष आदि उपस्थित भऽ जाइछ ।

1. **कर्ता आ क्रियाक मेल**–मैथिलीमे कर्ता ओ क्रियामे मेल पुरुषक आधार पर मुख्य रूपसँ होइत अछि । वचनक प्रभाव क्रिया पर नहि पड़ैत अछि ।

यथा- बालक खाइत छथि ।

बालक लोकनि खाइत छथि ।

कर्ताक एकवचन आ द्विवचन दुनू स्थितिमे क्रिया अपरिवर्तित अछि ।

लिंगक सेहो क्रिया पर कम्मे असर पड़ैत छैक ।

यथा- सीता खाइत छथि ।

राम खाइत छथि ।

कर्ता स्त्रीलिंग वा पुंलिग दुनू अर्थमे समाने अछि । हँ, भूतकालिक वा भविष्यत् कालिक क्रियामे कर्ताक लिंग बदललासँ क्रियामे सेहो परिवर्तन आबि जाइत छैक ।

यथा- राम घर गेलाह ।

सीता घर गेलीह ।

पुरुषक परिवर्तन क्रिया पदकेँ प्रभावित करैत अछि ।

यथा- हम देलहुँ । -उत्तम पुरुष

तोँ देलह । -मध्यम पुरुष

ओ देलनि । -अन्य पुरुष

उपर्युक्त वाक्यमे उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष आ अन्य पुरुष कर्ताक संग क्रियाक रूप बदलि गेल अछि ।

2. वाक्यमे जँ विभिन्न पुरुषक कर्ताक प्रयोग भेल अछि, तँ क्रिया सर्वाधिक आदर पात्र कर्ताक अनुसार बदलैत अछि ।

यथा- हम, तोँ ओ राम जाइत अछि ।

हम, तोँ ओ राम जाइत छथि ।

प्रथम वाक्यमे 'राम' सामान्य कर्ता अछि तँ 'अछि' क्रिया आ दोसरमे आदर-पात्र रहला कारणेँ आदर सूचक क्रिया 'छथि' क प्रयोग भेल अछि ।

एतय एक बात ध्यातव्य जे अन्तिम कर्ताक अनुसार क्रियाक प्रयोग भेल अछि ।

3. **संज्ञा ओ सर्वनामक अन्विति** – संज्ञाक लिंग, वचन ओ पुरुषक हिसाबेँ सर्वनामक प्रयोग होइत अछि आ ताहि अनुसारेँ क्रियाक प्रयोग होइत अछि ।

यथा- बालिका लोकनि विद्यालय गेलीह आ ओ लोकनि सन्ध्याकाल घुरतीह ।

बालक लोकनि विद्यालय गेलाह आ ओ लोकनि सन्ध्या काल घुरताह ।

4. जँ वाक्यमे तीनू पुरुषक कर्ता रहय तँ क्रिया उत्तम पुरुषक अनुसार होइत अछि ।

यथा- हम तोँ आओर ओ विद्यालय गेल छलहुँ ।

5. मध्यम पुरुष आदरहीन कर्ताक प्रयोग अत्यन्त घनिष्ठता अथवा देव-पितरक हेतु सेहो होइत अछि ।

यथा- हे भगवती ! तोहर महिमा के नहि जनैत अछि ?

रओ दोस्त ! आइ घर चल ।

6. **विशेष्य-विशेषणक संगति**-विशेषण सदा विशेष्यक अनुसार होइत अछि ।

यथा- राम अति सुन्दर बालक छथि ।

सीता अति सुन्दरी बालिका छथि ।

7. किछु शब्द एहन अछि जकर प्रयोग संगहि संग होइत अछि ।

यथा- जखन-तखन, जैयो-तैयो, यद्यपि-तथापि, जेहन-तेहन, जेँ-तेँ आदि ।

उदाहरण-**यद्यपि** हम स्वयं गेलहुँ **तथापि** ओ नहि अयलाह ।

एहि तरहेँ मैथिली भाषाक किछु विशेपता अछि जे आन भाषासँ भिन्न अछि । हिन्दी जकाँ एहि भाषामे कर्ताक चिह्न प्रयुक्त नहि होइत अछि । तेँ वाक्य रचना सेहो सरल अछि। मुख्य अछि सर्वनाम ओ क्रिया पद ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वाक्य रचनासँ की बुझैत छी ?
2. एक सरल वाक्यक कोन-कोन आवश्यक गुण अछि ।
3. कर्ता आ क्रियाक अन्वितिसँ की बुझैत छी ?
4. विशेषण ककरा कहल जाइत अछि ?
5. विशेष्यसँ अहाँ की बुझैत छी ?
6. निम्नलिखित वाक्यकेँ शुद्ध करू –

    (i) पंडितजीकेँ चूड़ा-दही नीक लगैत अछि ।

    (ii) हुनक पिताजी आयल आ चल गेल ।

    (iii) घर सुन्दर नीक लगैत अछि ।

    (iv) हुनक बहिन मेधावी अछि ।

    (v) रे दुष्ट ! अहाँ के छी ?

    (vi) अहिल्या गौतमक स्त्री छलीह ।

    (vii) उपरोक्त कथन सत्य अछि ।

    (viii) अनाधिकार प्रवेश निषेध अछि ।

    (ix) हुनक सौभाग्यशाली कन्याक विवाह होयत ।

    (x) राम निरोग भऽ गेलाह ।